NBT
नवभारत टाइम्स
Saturday, 15 July 2017

सैनिकों की रक्षा करेंगे 'बलिस्टिक' हेल्मेट

Ramesh.Tiwari@ timesgroup.com

■ **नई दिल्ली :** सेना को अब ऐसे हेल्मेट्स मिल चुके हैं, जो न सिर्फ दुश्मन की गोलियों और छर्रों से बल्कि उनके झटकों के बुरे असर से भी बचाएंगे। इन्हें बलिस्टिक हेल्मेट का नाम दिया गया है। देश की ग्यारहवीं योजना में ऐसे करीब 3,28,000 हेल्मेट्स की खरीद की जरूरत महसूस की गई थी।

इसके बाद 1,58,279 हेल्मेट्स खरीदने का फैसला हुआ। सेना को 7,500 हेल्मेट्स की पहली खेप की सप्लाई हो गई है। उम्मीद जताई जा रही है कि इस साल 30,000 हेल्मेट्स सेना को मिल जाएंगे। 2 साल के अंदर सभी प्रस्तावित हेल्मेट आ जाएंगे।

पाकिस्तान से लगे लाइन ऑफ कंट्रोल और चीन से लगे लाइन ऑफ ऐक्चुअल कंट्रोल के अलावा आतंकवाद और उग्रवाद विरोधी अभियानों में लगे सैनिकों को प्राथमिकता के तौर पर ये हेल्मेट मुहैया कराए जाएंगे। नेवी और यूएन के अभियानों में लगे सैनिकों को भी 15 हजार हेल्मेट दिए जा रहे हैं।

पिछले दो दशक में हेल्मेट का यह सबसे बड़ा ऑर्डर बताया जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि कानपुर की कंपनी एमकेयू इंडस्ट्रीज को हेल्मेट्स बनाने का कॉन्ट्रैक्ट करीब 175 करोड़ रुपये में दिया गया है। यह कंपनी पूरी दुनिया में हेल्मेट और बुलेटप्रूफ जैकेट की सप्लाई करती है।

करीब से चली गोली भी नहीं भेद सकेगी इसे

पुराने हेल्मेट

अभी सेना जिस हेल्मेट का इस्तेमाल करती है, उसे पटका कहा जाता है। यह बुलेटप्रूफ है, लेकिन इनसे सिर्फ सिर के अगले और पिछले हिस्से की रक्षा हो पाती है। साइड का हिस्सा असुरक्षित समझा जाता है। इनका वजन दो किलो से ज्यादा होता है।

नल हेल्मेट

ये हल्के होंगे और बेहद कम दूरी से किया गया हमला भी नाकाम कर सकेंगे। अगर 20 मीटर की दूरी से 9 एमएम की गोली मारी जाए तो यह हेल्मेट को भेद नहीं सकेगी। ये भी दो तरह के हैं। नॉर्मल हेल्मेट्स और कमांडर हेल्मेट्स। कमांडर हेल्मेट्स से तीन तरह के रेडियो सेट्स के साथ